16 उत्पादन तथा उत्पादन के साधन
[PRODUCTION AND FACTORS OF PRODUCTION]

उत्पादन का अर्थ
(MEANING OF PRODUCTION)

मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिये वस्तुओं तथा सेवाओं का उपभोग किया जाता है। वस्तुओं तथा सेवाओं के उपभोग के लिये इनका उत्पादन किया जाना आवश्यक होता है। यहाँ, उत्पादन का सही-सही अर्थ समझ लेना आवश्यक है। साधारण बोल-चाल की भाषा में उत्पादन का अर्थ वस्तुओं का निर्माण या सृजन (Creation) करने से लगाया जाता है, किन्तु अर्थशास्त्र में इसका अर्थ भिन्न होता है। भौतिकशास्त्र के **'वस्तु और शक्ति की अक्षयता सिद्धान्त'** (The Principle of conservation of matter and energy) के अनुसार मनुष्य न तो किसी नये पदार्थ (वस्तु) का निर्माण ही कर सकता है और न उसका विनाश ही। वह अधिक से अधिक प्रकृति-प्रदत्त पदार्थों में कुछ परिवर्तन कर उन्हें उपयोगी बना सकता है। उत्पादन के सन्दर्भ में **प्रो. मार्शल** ने ठीक ही कहा है—**"मनुष्य भौतिक वस्तुओं का निर्माण नहीं कर सकता है। मानसिक और नैतिक जगत में वह नये-नये विचारों को जन्म भले ही दे दे, किन्तु जब भौतिक वस्तुओं के निर्माण की बात आती है, तो वह केवल उपयोगिता का ही सृजन करता है।"**

"Man cannot create material things. In the mental and moral world, indeed, he may produce new ideas, but when he is said to produce material things, he really produces utilities." —*Marshall*

मार्शल के कथन को कुछ उदाहरणों द्वारा सत्यापित (Proved) किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, जब कोई बढ़ई किसी लकड़ी को चीरकर उससे कुर्सी या पलंग बनाता है, तो वह किसी नयी वस्तु का निर्माण नहीं करता। वह केवल लकड़ी को काट-छाँट कर उसकी उपयोगिता को बढ़ा देता है। यह उपयोगिता आर्थिक उपयोगिता (Economic utility) है, क्योंकि अब लोग लकड़ी की अपेक्षा कुर्सी या पलंग के लिये अधिक कीमत चुकाने को तैयार रहेंगे। इसी प्रकार, दर्जी के द्वारा पैंट या शर्ट बनाये जाते हैं, तो किसी नयी वस्तु का निर्माण नहीं किया जाता है बल्कि पहले से उपलब्ध कपड़े के आकार में परिवर्तन लाकर उसे हमारे लिये अधिक उपयोगी बना दिया जाता है। इसी प्रकार जूते के कारखाने में जूता बनाना, जुलाहे का कपड़ा बुनना, लोहार का कड़ाही बनाना, कुम्हार व ठठेरे का बर्तन बनाना आदि ऐसे कार्य हैं जिनमें किसी नयी वस्तु का निर्माण नहीं किया जाता बल्कि पूर्व से विद्यमान वस्तुओं की उपयोगिता में वृद्धि कर दी जाती है। अतः अर्थशास्त्र के अन्तर्गत—**"उत्पादन का अर्थ उपयोगिता का सृजन करने से है"**
"Production is the creation of utility."

इस प्रकार, उत्पादन शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है :

1. **उपयोगिता का सृजन** (Creation of Utility)—इसके अनुसार अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी बना दिया जाना उपयोगिता का सृजन कहलाता है। उदाहरणतः, बेकार की पड़ी हुई मिट्टी को कुम्हार सुराही के रूप में बदल देता है, तो वह उपयोगिता का सृजन करता है और जिसे ही अर्थशास्त्र में उत्पादन कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

2. **उपयोगिता में वृद्धि** (Increase in Utility)—पूर्व से उपयोगी वस्तुओं को और उपयोगी बना देना उपयोगिता में वृद्धि किया जाना कहा जाता है। उदाहरणतः, चीनी की उपयोगिता पहले से ही रहती है किन्तु हलवाई उसे और उपयोगी बनाकर (मिठाई बनाकर) उसकी उपयोगिता में वृद्धि कर देता है जिसे अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उत्पादन कहा जाता है।

उत्पादन के सम्बन्ध में आधुनिक अर्थशास्त्रियों का मत—इनके अनुसार उत्पादन को मात्र 'उपयोगिता का सृजन' या 'उपयोगिता में वृद्धि' कहना पूर्णतया सही प्रतीत नहीं होता है। इनके अनुसार, उपयोगिता में वृद्धि के साथ-साथ विनिमय मूल्य (कीमत) का होना आवश्यक है। उदाहरणार्थः, एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी मेहनत एवं अभ्यास के द्वारा अपने स्वास्थ्य और खेलने की कला में वृद्धि कर लेता है, किन्तु उसकी खेलने की कला अभी ऐसी नहीं है कि उसे अपनी सेवाओं के लिये कीमत मिल सके। अतः उसकी क्रिकेट खेलने की क्रिया को उत्पादन नहीं कहा जायेगा। हाँ, जब वह एक पेशेवर खिलाड़ी बन जाय और उसकी सेवाओं की उसे कीमत मिलने लगे, तो उसकी क्रिकेट खेलने की क्रिया को उत्पादन कहा जायेगा।

उत्पादन के सम्बन्ध में स्मरणीय बात यह भी है कि उत्पादन की क्रिया तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक कि वस्तु उपभोक्ता के हाथ में न पहुँच जाय। अर्थात् कच्चे माल की पूर्ति से लेकर उपभोक्ताओं के हाथ में अन्तिम वस्तुओं के पहुँचने तक की सभी अवस्थाएँ उत्पादन के अन्तर्गत आती हैं; जैसे—फुटकर व थोक व्यापारियों द्वारा वितरण का कार्य, यातायात सेवाएँ, कृषि व खानों में कार्य आदि।

उत्पादन की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF PRODUCTION)

उत्पादन की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी हैं, जो निम्नलिखित हैं :

1. **डॉ. फेयरचाइल्ड** के अनुसार, **"सम्पत्ति को अधिक उपयोगी बनाना ही उत्पादन है।"**
"Production consists creation of utility in wealth." —*Fairchild*

2. **एली** के अनुसार, **"आर्थिक उपयोगिता का सृजन ही उत्पादन है।"**
"Production means creation of economic utility." —*Ely*

3. **प्रो. टॉमस** के अनुसार, **"किसी वस्तु में मूल्य का सृजन करना ही उत्पादन है।"**
"Production is creation of value in commodity." —*Thomas*

4. **प्रो. निकॉल्सन** के अनुसार, **"किसी वस्तु के मूल्य में वृद्धि अथवा उसमें मूल्य के सृजन को उत्पादन कहते हैं।"**
"Production means an increase in the value of a commodity or creation of value." —*Nicholson*

5. **मेयर्स** के अनुसार, **"उत्पादन का अर्थ किसी क्रिया द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं में विनिमय की शक्ति लाना है।"**
"Production means any activity that results in goods or services intended for exchange." —*Meyers*

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर **उत्पादन का अभिप्राय उन वस्तुओं और सेवाओं का सृजन है जिनमें उपयोगिता और विनिमयसाध्यता** (Utility and exchangeability) **हो।**

उपयोगिता सृजन के तरीके
(METHODS OF CREATION OF UTILITY)

उत्पादन अथवा उपयोगिता सृजन के मुख्य तरीके निम्नलिखित हैं :

1. **रूप उपयोगिता** (Form Utility)—किसी वस्तु के रूप, रंग, आकार आदि में परिवर्तन लाकर उसकी उपयोगिता में वृद्धि किया जाना ही रूप उपयोगिता है। उदाहरण के लिये,

Scanned with CamScanner

बढ़ई द्वारा लकड़ी से कुर्सी व पलंग बनाना, लोहार द्वारा लोहे से लोहे की चीजें बनाना, मोची द्वारा चमड़ा से जूता-चप्पल बनाना, कुम्हार द्वारा मिट्टी से बर्तन बनाना, दर्जी द्वारा कपड़े से ड्रेसेज बनाना आदि रूप उपयोगिता के उदाहरण हैं। रूप उपयोगिता उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है।

2. **स्थान उपयोगिता** (Place Utility)—किसी वस्तु के स्थान में परिवर्तन करने से उसकी उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे स्थान उपयोगिता कहते हैं। जो वस्तु किसी स्थान में प्रचुर मात्रा में मिलती है, उसकी वहाँ उपयोगिता बहुत कम होती है, परन्तु जब वही वस्तु उस स्थान पर लायी जाती है जहाँ उसकी कमी है, तो उसकी उपयोगिता वहाँ बढ़ जाती है। उदाहरण के लिये, नदी के किनारे बालू प्रचुर मात्रा में मिलती है, इसलिये वहाँ उसकी उपयोगिता कम होती है, किन्तु जब उसी बालू को शहर में लाया जाता है, तब उसकी उपयोगिता बढ़ जाती है। इसे स्थान उपयोगिता कहा जाता है।

3. **समय उपयोगिता** (Time Utility)—कुछ वस्तुओं को यदि कुछ समय तक संग्रह करके रखा जाय तो उनकी उपयोगिता में वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार उपयोगिता का सृजन करना/वृद्धि करना समय उपयोगिता कहलाती है। उदाहरण के लिये, नयी शराब और नये चावल की कीमत कम होती है, किन्तु यदि उन्हें संग्रह करके कुछ समय तक रख दिया जाय तो उनकी कीमत बढ़ जायेगी अर्थात् उपयोगिता में वृद्धि होगी। इसी प्रकार गर्मी के दिनों में स्वेटर की उपयोगिता कम होती है किन्तु यदि उसे जाड़े तक संग्रह करके रख दिया जाय तो उसकी उपयोगिता में वृद्धि हो जायेगी। ये समय उपयोगिता के उदाहरण हैं।

4. **स्वामित्व उपयोगिता** (Possession Utility)—जब वस्तुओं का स्वामित्व परिवर्तन करके उपयोगिता बढ़ायी जाय तो, उसे स्वामित्व उपयोगिता कहेंगे। उदाहरण के लिये, एक पुस्तक विक्रेता के यहाँ पड़ी हुई पुस्तकों की उपयोगिता कम होती है, किन्तु जब वे पुस्तकें विद्यार्थियों के हाथ में बेच दी जाती हैं, तो पुस्तकों की उपयोगिता में वृद्धि हो जाती है। दूसरे शब्दों में, स्वामित्व परिवर्तन द्वारा भी वस्तुओं की उपयोगिता में वृद्धि की जा सकती है।

5. **सेवा उपयोगिता** (Service Utility)—मनुष्य एक-दूसरे की कुछ सेवाएँ करते हैं। जब कभी उपयोगिता का सृजन भौतिक वस्तुओं के रूप में नहीं कर सेवाओं के रूप में किया जाता है, तो उसे सेवा उपयोगिता कहा जाता है। उदाहरण के लिये, डॉक्टर द्वारा चिकित्सा करना, शिक्षक द्वारा अध्यापन का कार्य किया जाना, संगीतज्ञों द्वारा संगीत सुनाया जाना, पुलिस द्वारा रक्षा सम्बन्धी कार्य किया जाना आदि सेवा उपयोगिता के उदाहरण हैं।

6. **ज्ञान उपयोगिता** (Knowledge Utility)—उपभोक्ता के ज्ञान के स्तर में वृद्धि लाकर भी उपयोगिता में वृद्धि की जा सकती है। उदाहरण के लिये, विज्ञापन द्वारा वस्तुओं के गुणों से परिचित कराना ज्ञान उपयोगिता है। इस प्रकार ज्ञान वृद्धि से किसी वस्तु की उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे ज्ञान उपयोगिता कहा जाता है।

Scanned with CamScanner